***जय शिवजी आरती***

जय शिव ओंकारा, हर जय शिव ओंकारा ।

ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव, अर्द्धांगी धारा ॥

ॐ जय शिव ओंकारा ।

एकानन चतुरानन पंचानन राजे ।

हंसासन गरूड़ासन वृषवाहन साजे ॥

ॐ जय शिव ओंकारा ।

दो भुज चार चतुर्भुज दसभुज अति सोहे ।

त्रिगुण रूप निरखता त्रिभुवन जन मोहे ॥

ॐ जय शिव ओंकारा ।

अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी ।

चंदन मृगमद सोहे भोले शुभकारी ॥

ॐ जय शिव ओंकारा ।

श्वेतांबर पीतांबर बाघंबर अंगे ।

सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे ॥

ॐ जय शिव ओंकारा ।

कर के मध्य कमंडल चक्र त्रिशूलधरता ।

जगकर्ता जगभर्ता जगपालनकर्ता ॥

ॐ जय शिव ओंकारा ।

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका ।

प्रणवाक्षर के मध्‍ये ये तीनों एका ॥

ॐ जय शिव ओंकारा ।

पर्वत सोहैं पार्वती, शंकर कैलासा ।

भांग धतूरे का भोजन, भस्मी में वासा ॥

ॐ जय शिव ओंकारा ।

काशी में विश्वनाथ विराजत, नंदी ब्रह्मचारी ।

नित उठ भोग लगावत, महिमा अति भारी ॥

ॐ जय शिव ओंकारा ।

त्रिगुण शिवजी की आरति जो कोइ नर गावे ।

कहत शिवानंद स्वामी सुख संपति पावे ॥

जय शिव ओंकारा, ॐ जय शिव ओंकारा ।

ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव, अर्द्धांगी धारा ॥

ॐ जय शिव ओंकारा ।